Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, MAR–APR, 2018, VOL- 5/44

"नीतिमत्ता" एक सामाजिक जीवन मूल्य

S. K. Pundir, Ph. D.
Associate Professor, Dept. of Education, Meerut College, Meerut

Abstract

श्रीगोस्वामी जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस नैतिकता का दूसरा नाम है, इस कालजयी ग्रंथ में मनुष्य के जीवन के सभी नैतिक मूल्य हैं। ये नैतिक मूल्य समाज के हर स्थान पर परिलक्षित होते रहते हैं, जो समस्त संसार को नैतिकता का पाठ पढ़ाते रहते हैं। इसमें हमें भगवान श्री राम, माता सीता, भैया भारत, लक्ष्मण, हनुमान जी आदि सभी अपनी नैतिकता को पूर्ण रूप से निभाते है बल्कि सबने अपने–अपने समय पर नैतिकता दिखायी। श्री रामचरितमानस में मनुष्य तो क्या पशु–पक्षियों ने भी नैतिकता का उत्कृष्ट उदाहरण दिया है जैसे जटायु अपने प्राण न्योछावर कर देता है पर जीते जी माता सीता को बचाने की कोशिश नहीं छोड़ता। इस प्रकार हमें हर स्थान पर नैतिकता मिलती है।

मुख्य बिन्दु : *नीति, मूल्य, कर्म और प्रभाव।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

जीवित प्राणियों को जिस प्रकार शरीर, भोजन, जल, वायु आदि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार समाज में रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को नैतिकता की आवश्यकता होती है। बिना नैतिकता के आदमी सदाचार का चयन नहीं कर सकता **शुक्रनीति (1–5–11) में लिखा है "सम्पूर्ण लोक के व्यवहार की स्थिति नीति के बिना उसी प्रकार असंभव है, जैसे भोजन के बिना देहधारियों के शरीर की स्थिति।"** मनुष्य जब से संसार में जन्म लेता है, जबही से अच्छे कर्म और बुरे कर्म उसके जीवन में आते रहते है। परन्तु मनुश्य को अपनी नैतिकता नहीं छोड़नी चाहिए। मनुष्य के जीवन की सभी गतिविधियाँ जैसा पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी में नैतिकता विद्यमान रहती है, जिस प्रकार मनुष्य को जीवित रहने के लिए जल, वायु, भोजन और वस्त्र की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार समाज में शान्तिपूर्वक आचरण करने के लिए नैतिकता की आवश्यकता होती है। यही एक ऐसा गुण है जो साधारण व्यक्ति को **नर से नारायण** की दिशा में मोड़ता है।

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

श्री रामचरितमानस में नीतिमत्ता

रामचरितमानस में नैतिकता आरम्भ से ही देखने को मिलती है जब भगवान् श्री विष्णु माता कौशल्या के यहाँ अपने चतुर्भुज रूप में शंख, सुदर्शन, गदा और शस्त्र लिए प्रकट होते हैं। तो माता कौशल्या प्रभु से प्रार्थना करती हैं। हे ! प्रभु आपने तो मेरे यहाँ (रानी कौशल्या और राजा दशरथ पूर्व जन्म के, रानी सतरूपा और राजा मनु) बच्चे के रूप में आने का वचन दिया था। हे नैतिकता का पालन करने वाले प्रभु, अपने वचन का पालन कीजिए। इतना सुनते ही लीलाधर भगवान अपना दिव्य रूप छोड़कर इस संसार की मर्यादा का मान रखते हुए शिशु रूप में आते हैं और माता कौशल्या और राजा दशरथ के आँगन में एक साधारण बच्चे की भाँति लीलाएँ करते हैं। जिसको देखकर माता को परम सुख मिलता है।

''भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी।
कीजै शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा।।'' 1/192

श्री रामचरितमानस में जब गुरु विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षा करने के उपरांत जब श्री राम और लक्ष्मण जी का कार्य समाप्त हो गया था। परन्तु उसी समय जनकपुरी से गुरू विश्वामित्र के लिए सीता–स्वंयर (धनुषयज्ञ) का निमंत्रण आता है, इसलिए गुरु विश्वामित्र श्रीराम और लक्ष्मण को भी अपने साथ चलने के लिए कहते है। यहाँ पर श्री राम एक ि ाश्य की नैतिकता दिखाते हुए श्रद्धा पूर्वक गुरुजी के साथ चल देते हैं।

"तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई।।
धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा।।" (1/209/5)

यहाँ पर श्री तुलसीदास जी बताते हैं कि भगवान राम के आचरण में नीति इस प्रकार निवास करती थी कि गुरु वशिष्ठ, भगवान श्रीराम को सदा नैतिक मूल्यों की रक्षा करने वाले और श्रेष्ठ नीति के ज्ञाता कहते थे

"नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सम जान जथारथुं।।
बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला। माया जीव करम कुलि काला।।" (2/253/3)

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गोस्वामी जी बताते हैं कि जब रावण द्वारा विभीषण का तिरस्कार कर, उसे अपने राज्य से निकाल दिया गया, तो विभीषण प्रभु श्रीराम की शरण में आये। उस समय सुग्रीव ने उनका विरोध किया परन्तु श्री रामचन्द्र जी ने, जो नीति का और दया का प्रतीक थे उन्होंने अपनी शरण में आए हुए विभीषण को स्वीकार कर लिया। क्योंकि भगवान श्रीराम का स्वभाव ऐसा था कि यदि करोड़ों ब्राह्मणों की हत्या, जिस व्यक्ति को लगी हो, अगर वह भी श्री राम की शरण में आ जाता है, तो वे उसे भी भारण प्रदान करते हैं।

"कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू।।
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।" (5/43/1)

रामचरितमानस में मर्यादा सर्वत्र दिखाई देती है और जहाँ भी इस मर्यादा का हनन होता है। वहाँ प्रभु राम इसके पक्ष में खड़े हो जाते हैं। मर्यादा के लिए वह युद्ध भी करते हैं और वध भी करते हैं। बाली और सुग्रीव प्रसंग में महावीर बाली, जो अपने छोटे भाई सुग्रीव की पत्नी को बलात् हरण कर लेता है। तो सुग्रीव राम से अपनी सारी व्यथा बताते हैं। श्रीराम सुग्रीव को न्याय दिलाने का वचन देते है और बाली को दंड स्वरूप मृत्यु देते हैं। मृत्युशय्या पर पड़े बाली को यह कार्य अनुचित लगता है। वह प्रभु राम से अपने प्रति इस व्यवहार का कारण पूछता है। तब श्रीराम बाली को बताते हैं कि अनुज की वधू, पुत्र की स्त्री, बहन और कन्या, ये चारों पुत्री के समान होती हैं। जो भी इनको बुरी दृष्टि से देखता है, उसको दंड देने में या वध करने में कोई पाप नहीं होता बल्कि मर्यादा की रक्षा होती है–

''अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हहि कुदृष्टि विलोकइ जोई। ताहि बधे कुछ पाप न होई।।'' 4/8/4

श्री तुलसीदास जी कहते हैं कि राम–रावण युद्ध के दौरान एक स्थिति ऐसी उत्पन्न होती है जब राक्षस राज रावण अपने भाई विभीषण को मारने के लिए शक्ति छोड़ता है, तो श्री राम स्वयं उस भाक्ति के सामने आ जाते हैं, यहाँ पर श्री राम ने अपने प्रण की रक्षा की,

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जो उन्होंने विभिशण को लंका का राजा बनाने का दिया था। इस प्रकार उन्होंने विभीषण को लंका का राज्य तो पहले ही दे दिया था। रावण से उनके जीवन को बचाकर जीवनदान भी दिया।

"आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारति भंजन पन मोरा।।
तुरत बिभीषन पाछें मेला। सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला।।" (6/93/1)

निश्कर्श :

जिस प्रकार श्रीरामचरितमानस में सभी अपनी नैतिकता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हमे सब लोगों को भी श्री रामचरितमानस से प्रेरणा लेकर नैतिकता पूर्ण कार्य करने चाहिए। हमें किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए, हमें किसी की चोरी नहीं करनी चाहिए, हमें किसी भी प्रकार से दूसरे व्यक्ति की हानि नहीं करनी चाहिए और जितना भी हो सके हमें बुजुर्ग, अनाथ, दिव्यांग और लाचार व्यक्तियों की सहायता करनी चाहिए। यदि हम अपने जीवन में नैतिकता को नहीं अपनाते हैं, तो **हम में और पशु** में कोई अंतर नहीं रह जाएगा। जिस प्रकार एक छोटे से पौधे को बड़ा वृक्ष बनाने के लिए उसके चारों ओर बाड़ लगाकर उसकी रक्षा की जाती है। ठीक इसी प्रकार यदि हम नैतिकता को अपने जीवन में अपना ले तो यह नैतिकता हमारे जीवन को चारों ओर से बाड़ बनकर हमारी बुरे कार्यों से रक्षा करेगी जैसे चोरी करना, झूठ बोलना, लड़ाई–झगड़ा करना, आलोचना करना आदि सब कार्यों से दूर रहेगें। क्योंकि नैतिकता ही हमें धर्म–अधर्म, पाप–पुण्य, स्वर्ग–नर्क, शुभ–अशुभ, उचित–अनुचित, सही–गलत और सदाचार–दुराचार का ज्ञान देती है। जिससे हम अपने समाज को श्रेश्ठ और अच्छा बना सकते है। रामचरितमानस को जो भी वर्ग, चाहे वह शासक वर्ग हो, समाज वर्गं, शिक्षा वर्ग या जनसाधारण वर्ग हो, इससे प्रेरणा लेगा वही अपने जीवन को नैतिवान बना लेगा। रामराज्य आज भी समाज के हर क्षेत्र में नैतिकता और सामाजिक सद्भाव बनाने की शिक्षा देने में सार्थक सिद्ध हुआ है। गोस्वामी तुलसीदास जी जिस नैतिकता की परिकल्पना करते हैं उसे रामचरितमानस में पूर्ण रूप से स्थापित करते हैं। उनकी सृजन शक्ति, कल्पना शक्ति के द्वारा ही राम मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से सुशोभित हो सके हैं और राम का अनुसरण करके उनके पीछे–पीछे अन्य सभी पात्र भी नैतिकता अनुकूल आचरण करते गए और इस प्रकार नैतिकता के दृष्टिकोण से रामचरितमानस एक सफल ग्रंथ है।

सन्दर्भ

बलकाण्ड़ रामचरितमानस, दो 192
बालकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 209, चौ 5.
अयोध्याकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 253 चौ. 3.
सुन्दरकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 43, चौ. 1.
किश्किंधाकाण्ड रामचरितमानस, दो. 8, चौ. 4.
लंकाकाण्ड़ रामचरितमानस, दो. 93, चौ. 1.
भुक्रनीति (1–5–11).

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies